RNI No.: RAJBIL/2013/54153
U.G.C. Approved No. 64524

ISSN : 2322-0074

अलख दृष्टि

ALAKH DRISHTI

(भाषा, दर्शन, साहित्य, संस्कृति एवं मानविकी की संवाहिका त्रैमासिक शोध पत्रिका)

वर्ष-5 • अंक-04 • त्रैमासिक • अक्टूबर-दिसम्बर, 2017

A Peer Reviewed Research Quarterly

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
01.	विश्वसुन्दरी विश्वेश्वरी अन्नपूर्णा	प्रो. हरिशंकर पाण्डेय	06-10
02.	स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना (SGSY) का महिलाओं पर प्रभाव (अलवर-राजस्थान का एक अध्ययन)	डॉ. बिजेन्द्र प्रधान	11-15
03.	जैन धर्म में अनेकान्तवाद	मेवालाल चैतन्य	16-25
04.	आचार्य बच्चूलाल अवस्थी की 'प्रतानिनी' का स्थालीपुलाक पाकपरिशीलन	डॉ सत्यप्रकाश दुबे	26-33
05.	सम्राट अशोक का मूल्यांकन (पुरातात्विक आधार पर)	डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा	34-38
06.	तुलसी के रामचरितमानस में नारी-चिंतन	शर्मिला सोनी	39-43
07.	Revisiting Gandhi	Dr Anil Dutta Mishra	44-51
08.	Learning and Teaching of English in Nagaur District: Problems and Solutions	Tripti Tripathi Dubey	52-57
	पुस्तक समीक्षा	डॉ पुष्पा मिश्रा	58

सम्राट अशोक का मूल्यांकन

(पुरातात्त्विक आधार पर)

डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा

ऐतिहासिक तथ्यों को उद्‌घाटित करने में सम्राट् अशोक का मूल्यांकन अत्यावश्यक है। इस मूल्यांकन के आधार पर अशोक एक महान् सम्राट् सिद्ध होता है। वह भारतीय इतिहास का ही नहीं विश्व-इतिहास का एक आदर्श व महान् व्यक्तित्त्व वाला सम्राट् था। उसकी महानता उसके व्यक्तिगत चरित्र, उदात्त नैतिक आदर्श, मानवोचित गुण, अगाध धर्मपरायणता एवं समस्त मानवता के कल्याण के कार्यों के करने में था। उसने अपने आदर्शों से न केवल मानवता को सचेत किया अपितु उसका पालन भी किया। उसने अपनी नीति एवं महान् कार्यों से विश्व-इतिहास का मार्ग प्रशस्त किया और ऐसे आदर्शों को प्रस्तुत किया, जो आज भी अनुकरणीय है। अशोक के चरित्र का मूल्यांकन हम निम्न विशेषताओं के आधार पर कर सकते हैं-

1. **महान् व्यक्तित्वः** अशोक मानव रूप में देवता था और देवत्व उसके व्यक्तित्व का प्रमुख अंग था। कलिंग युद्ध के वीभत्स रूप से उसके हृदय में जो अन्तःनाद हुआ, उससे उसके व्यक्तित्व का समन्वित विकास हुआ। इससे हम उसके व्यक्तित्व में धर्मपरायणता[1], कर्तव्यपरायणता[2], सत्यनिष्ठा[3], सेवा[4], अहिंसा[5], त्याग[6], उदारता[7], पवित्रता[8], सहिष्णुता[9] व लोकहित-भावना[10] को वास्तविक रूप में देख सकते हैं। निस्सन्देह उसका व्यक्तित्व महान् था, जो नैतिकता व आध्यात्मिकता से अनुप्राणित था।

2. **धर्मविजयी[11]:** अशोक ने शान्ति और अहिंसा पर आधारित धर्म से मानवहृदय में जिस विशाल साम्राज्य को स्थापित किया, वह अद्वितीय था। कलिंग-युद्ध के बाद उसने युद्धविजय की नीति को त्याग दिया और धम्मविजय की नीति का अनुगमन किया। रणघोष के स्थान पर उसने धर्मघोष प्रारम्भ कर, धर्मविजय की ओर अग्रसर हुआ। यह धर्मविजय मानव-शरीर पर नहीं आत्मा पर थी, जो आत्मबल, प्रेमबल, शान्ति व अहिंसा के बल पर ही प्राप्त की जा सकती थी। अशोक ने इन शास्त्रों को धर्माचार्यों व धर्म-प्रचारकों के कन्धों पर रखकर न केवल भारत अपितु भारत के बाहर भी धम्मविजय की नीति का प्रचार किया। अशोक की यह धार्मिक, नैतिक व आध्यात्मिक विजय अपूर्व थी।